नाज़िम हिकमत की दो कविताएं

लालसा

मैं समन्दर की तरफ़ वापस लौटने की लालसा से भरा हुआ हूं।
भरा हुआ हूं पानी के नीले आईने में झलकने और बढ़ने की लालसा से
मैं समन्दर की तरफ़ वापस लौटने की लालसा से भरा हुआ हूं
जहाज़ रवाना होते हैं खुशरौशन उफ़क की जानिब
और वह उदासी नहीं हैं जो उसके सफ़ेद पासों को तानती और फैलाती है,
और बेशक़, बस एक दिन को ही
खुद को जहाज़ पर सवार देखते रहने को
मेरी पूरी ज़िन्दगी काफ़ी होगी;
और मौत चूंकि खुदा का फरमान है
मैं, पानी में दफ़्न एक लौ के मानिंद
लालायित हूं बुझ जाने को पानी में ही।
मैं समन्दर की तरफ़ वापस लौटने की लालसा से भरा हुआ हूं
भरा हुआ हूं समन्दर की तरफ़ वापस लौटने की लालसा से।

उम्मीद

हम ख़ूबसूरत दिन देखेंगे, बच्चों,
हम देखेंगे धूप के उजले दिन...
हम दौड़ायेंगे, बच्चों, अपनी तेज़ रफ़्तार नावें खुले समन्दर में
हम दौड़ायेंगे, उन्हें चमकीले-नीले-खुले समन्दर में...
ज़रा सोचो तो, पूरी रफ़्तार से जाती
पहलू बदलती हुई मोटर
घरघराती हुई मोटर!

अरे बच्चो, कौन बता सकता है भला
सौ मील की रफ़्तार से दौड़ते वक्त लिये गये
बोसे के बेमिसाल अहसास को...

सच है कि आज हमें
शुक्रवार और इतवार को
बाग़-बगीचों में जाने का मौक़ा हाथ आता है
सिर्फ़ शुक्रवार को
सिर्फ़ इतवार को...

सच है कि आज
हम रोशनी से नहाई सड़कों पर
शो रूमों को ऐसे ताका करते हैं
जैसे कोई परीकथा सुन रहे हों,
शीशे की दीवारों वाले
सतहत्तर मंज़िल ऊंचे वे शोरूम!

सच है है कि जब हम जवाब मांगते हैं
तो काली-मनहूस क़िताब खुल जाती है हमारे लिए:
जेलख़ाना।
चमड़े की पेटियां अपनी गिरफ़्त में ले लेती हैं
हमारी बाहें
टूटी हुई हड्डियां
खून

सच है कि आज हमारे खाने की मेज़ पर
गोश्त हफ़्ते में एक बार होता है सिर्फ़
और हमारे बच्चे
काम से फारिग होकर
खाल-मढ़े हड्डियों के ढांचे जैसे
वापस लौटते हैं घर...

सच यही है फ़िलहाल
लेकिन यक़ीन लाओ मुझपर
हम खूबसूरत दिन देखेंगे बच्चों,
हम देखेंगे धूप के उजले दिन
हम दौड़ायेंगे अपनी तेज़रफ़्तार नावें खुले समन्दर में
हम दौड़ायेंगे उन्हें चमकीले-नीले-खुले समन्दर में

(अनुवादः सुरेश सलिल)

नाज़िम हिकमतः जन्मः जनवरी 1902, सेलोनिका, तुर्की में। मृत्युः जून 1963, मास्को में। तुर्की के क्रान्तिकारी वामपंथी कवि। बीसवीं शताब्दी के विश्व के महानतम कवियों में गणना। मात्र उन्नीस वर्ष की उम्र में ओटोमन साम्राज्य के विरुद्ध जनवादी क्रान्ति में शामिल हुए। फिर सोवियत रूस में अध्ययन के दौरान समाजवाद से प्रभावित हुए और मार्क्सवादी बने। 1925 में तुर्की लौटते ही जेल-यात्राओं का जो सिलसिला शुरू हुआ, वह थोड़े-थोड़े अन्तरालों के साथ 1951 तक चलता रहा। इस दौरान नाज़िम की कविताएं प्रतिबंधों के बावजूद आम जनता में इतनी लोकप्रिय हुई कि लोग-बाग हाथ से लिखकर और सुनाकर उन्हें ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुंचाते थे। द्वितीय विश्वयुद्ध की समाप्ति तक नाज़िम विश्वविख्यात हो चुके थे। दुनिया भर की मुक्तिकामी जनता और बुद्धिजीवियों के आन्दोलन के दबाव में 1951 में नाज़िम हिकमत जेल से मुक्त तो हुए, लेकिन इसके बाद मृत्युपर्यन्त उन्हें निर्वासित जीवन बिताना पड़ा।

नाज़िम एक सच्चे क्रान्तिकारी कवि थे। वे जनता के बुद्धिजीवी थे। वे 'जीवन-संघर्ष-सृजन' के मूर्त रूप थे। जन्म शताब्दी वर्ष पर, हम इस महान जनकवि का क्रान्तिकारी अभिनन्दन करते है।

-सम्पादक